Dr. Vandana Suman
Professor
Dept of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG - SEMESTER - VI
MJC-11 Contemporary Indian Philosophy

"Ambedkar"

"Criticism of Castism"

डा० अम्बेदकर न केवल एक व्यक्ति थे बल्कि वे एक संस्था और समाज थे। डा० अम्बेदकर ने जो सोचा और जो किया वह हिंदू समाज की शुद्धता के लिए था, इसकी एकता के लिए था और इसके विकास के लिए था, ना कि इसे पंगु बनाने, इसकी एकता खंडित करने और इसके विकास को अवरुद्ध करने के लिए। डा० अम्बेदकर ने हिन्दू समाज के एक अलमस्त व अवसन्न अंग को चेतना प्रदान की है। यह उनकी सामाजिक प्रबुद्धता का ही प्रतिफल है कि वे बारूद पर बैठे हिंदू समाज के लिए माचिस की एक तीली नहीं बने, बल्कि इन्सानियत को अग्नि दाह के हवाले कर के सदियों से असहनीय तथा अमानवीय पीड़ा को भोगते आ रहे अवर्ण जाति को अर्थ और नफरत के ज्वालामुखी को फटने से रोकने का सत्प्रयास किया और बहुत चेतना से घटाटोप अंधेरे में अनेकानेक दिशाएं दिग्दर्शित चमका दी।

मानव-समाज की डा० अम्बेदकर ने ऐसी ही जो समता, स्वतन्त्रता और भ्रातृत्व भावना पर खड़ा हो और जिसकी नींव त्याग, बलिदान, सत्य, अहिंसा, समर्पण और प्यार पर रखी गई हो। डा० अम्बेदकर सामाजिक अधिकारों को प्राप्त करने की दिशा में राजनीतिक अधिकारों को भी प्राप्त कर लेना जरूरी समझते थे।

डा० अम्बेडकर मानते थे कि जाति-प्रथा ने भारतीय समाज की रीढ़ की हड्डी तोड़ डाली है।

जातिवाद एक अमानवीय और रूढ़िवादी व्यवस्था है जो जन्म के आधार पर असमानता, भेदभाव और शोषण को बढ़ावा देती है। यह सामाजिक पदानुक्रम बनाकर प्रतिभा को दबाती है, राष्ट्रीय एकता को कमजोर करती है, और आर्थिक विकास में बाधा डालती है, जो आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के पूरी तरह खिलाफ है।

जातिवाद की प्रमुख आलोचनाएँ इस प्रकार हैं —

(1) मानवाधिकार और समानता का उल्लंघन — यह मनुष्यों के बीच भेदभाव करती है जो संवैधानिक अधिकारों और समतावादी समाज के विपरीत है।

(2) सामाजिक शोषण और दमन — निम्न समझी जाने वाली जातियों का शोषण, उत्पीड़न और हिंसा का शिकार होना जातिवाद का ही दुष्परिणाम है।

(3) आर्थिक असमानता — यह लोगों को उनके पारंपरिक अक्सर कम भुगतान वाले व्यवसायों तक सीमित रखती है, जिससे आर्थिक प्रगति रुक जाती है।

(4) शिक्षा और अवसरों से वंचना — कुछ विशेष जातियों को शिक्षा, सामाजिक सेवाओं और

बेहतर रोजगार के अवसरों से वंचित रखा जाता है।

(5) राष्ट्रीय एकता में बाधक - यह समाज को छोटे - छोटे समूहों में विभाजित कर 'राष्ट्र' की भावना के बजाय 'जाति' के स्वार्थ को बढ़ावा देती है।

(6) मनोवैज्ञानिक और मानसिक रोग — डॉ. अम्बेडकर के अनुसार, यह एक मानसिक अवस्था है जो लोगों को संकीर्णता और हीनता या श्रेष्ठता की भावना में जकड़ती है।

इस व्यवस्था के कारण ही डॉ. अम्बेडकर जैसे सुधारकों ने जाति प्रथा के पूरी तरह उन्मूलन का आह्वान किया था। डॉ. अम्बेडकर को जात - पांत तोड़क मण्डल ने अपने वार्षिक अधिवेशन में अध्यक्ष पद से संबोधन देने के लिए आमंत्रित किया था परंतु सवर्ण जाति वालों को यह बात रास नहीं आई। उन्होंने जात - पात तोड़क मंडल पर दबाव डाला कि वे डॉ. अम्बेडकर को जात - पात तोड़क मंडल के वार्षिक अधिवेशन पर नहीं बुलाएं। लिहाजा डॉ. अम्बेडकर ने अपना वह भाषण 'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट' (जात-पाँत का बीज नाश) के नाम से पुस्तकाकार रूप में छपवा दिया। इस भाषण में उन्होंने लिखा था कि—

(1) जात - पांत ने हिंदुओं को नष्ट कर दिया है।

(ii) चतुर्वर्ण के आधार पर हिंदू समाज का संगठन संगत नहीं है। कारण, वह अपने निजी बनुण और योग्यता के आधार पर कायम रहने योग्य नहीं है।

(iii) चतुर्वर्ण के आधार पर हिंदू-समाज का पुनर्गठन असम्भव है और हो भी जाए तो वह व्यर्थ है। इससे लाभ के स्थान पर हानि ही होगी।

(iv) हिंदू समाज को ऐसे धार्मिक आधार पर अवश्य नवीन सिरे से पुनर्गठित करना चाहिए जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे को स्वीकार करे।

(v) जात-पांत प्रणाली मात्र मजदूरी का विभाजन न होकर मजदूरों का बंटवारा है।

(vi) जात-पाँत समाज के लिए नासूर है।

(vii) आर्थिक दृष्टिकोण से जाति-भेद प्रणाली से आर्थिक क्षेत्र में किसी प्रकार की सुयोग्यता नहीं आती है।

(viii) जात-पाँत ने जनभावना का तिरस्कार किया है तथा लोकमत का दायरा छोटा किया है।

(ix) हिंदू समाज में प्रत्येक जाति अपने तक सीमित रहती है। यथार्थतः वह जातियों का एक समूह है। इससे हिंदू समाज गहरे अंधकार में जा पड़ा है।

(x) भारत में शायद ही

कोई ऐसी जाति होगी जिसमें किसी मिलावट न हो। इसका शिकार ब्राह्मण भी हुए हैं।

(XI) चार वर्ण वाली व्यवस्था के कारण हिंदुओं की प्रणाली में हिंदुओं की कार्यवाही के लिए नहीं अतः शनैः अयोग्य बना गई थी क्योंकि इन्हें शास्त्र रचने का अधिकार नहीं था, अतः ये क्रान्तियाँ कैसे कर सकती थीं। कैसे कर सकती थीं क्योंकि

(XII) दासता को इन्होंने चिरस्थायी समझ लिया है। वे इससे छुटकारा नहीं पा सकते।

(XIII) वे चाहते थे कि हिंदुओं में से यह विश्वास दूर किया जाए कि शास्त्र व वेद शुद्ध, पुनीत, अखण्ड, प्रमाणिक तथा ईश्वरीय है। यदि प्रत्येक स्त्री-पुरुष को शास्त्रों की गुलामी से विमुक्त कर देंगे तो वे बिना जात-पांत पूछे (अथवा जात-पांत तोड़कर) विवाह कर लेंगे। बिना रक्त-संबंध स्थापित हुए उनका मानना था जात-पांत की कारा से हिंदू-समाज मुक्त नहीं हो सकता। पृथकत्व तथा परायेपन की मनोवृत्ति जात-पांत से ही जन्म लेती है। (१४) वस्तुतः यह तो जाति का अंधविश्वास है, यह मिथ्याविश्वास टूटेगा। तभी जात-पांत से मुक्ति मिल सकेगी। इसलिए अपनत्व के मार्ग पर अभी वेदों और शास्त्रों की गिरफ्त से

नीति और गलत परिपाटी का त्याग हो तथा परस्पर संबंधों के पवित्र प्रवाह हो बड़ी और सम्मान होने का लोग प्राप्त करें।

(XIV) जाति-पाँति की नींव शास्त्रों से है। शास्त्रों ने हिंदू धर्म को कलंकित बनाया है और प्रत्येक व्यक्ति को जो हिंदू है दूषित किया है। बहुत जरूरी यह है कि शास्त्रों की पवित्रता और ईश्वरीयता के अंधविश्वास से हिंदू समाज मुक्त हो।

डा. अम्बेदकर के इस लेख ने हिंदू समाज में क्रांति ला दी। जहाँ उनके इन विचारों का विरोध प्रकट हुआ वहाँ उनके विचारों के प्रति लोगों में विश्वास भी पैदा हुआ।

अछूतों के लिए डा. अम्बेडकर अंत तक लड़े थे और भरसक कोशिश की थी कि उन्हें हिंदू समाज में सम्मानीय स्तर दिला सकें। लेकिन वे इसमें सफल नहीं हुए और उन्होंने निर्णय किया कि हिंदू समाज में रहकर उन्हें कदापि सवर्ण जैसा दरजा नहीं मिल सकता है अतः हिंदू धर्म छोड़कर और किसी धर्म में दीक्षा लेकर ही वह समान सामाजिक स्तर पा सकते हैं। उन्होंने अपने अनुयायियों को लेकर हिंदू धर्म छोड़ दिया और वे सब बौद्ध हो गए।